उड़ने वाला गलीचा

सुबोध बाल-सीरीज-६

उड़ने वाला गलीचा

अनिलकुमार

सुबोध बाल पॉकेट बुक्स

प्रकाशक | सुबोध पॉकेट बुक्स
दरियागंज, दिल्ली-6

संस्करण | प्रथम : नवम्बर, 1971

मुद्रक | पुष्प प्रिंटिंग प्रेस
नवीन शाहदरा, दिल्ली-३२

मूल्य : एक रुपया

उड़ने वाला गलीचा

बहुत दिन हुए, हमारे देश में एक बूढ़ा सुलतान था। उसके तीन शहजादे थे—हुसैन सबसे बड़ा था, अली मंझला और अहमद सबसे छोटा। तीनों भाइयों में आपस में खूब प्यार था। वे आपस में कभी लड़ते-झगड़ते नहीं थे। पर जब सुलतान की भानजी शहजादी नूरो निहार भी अपने मामा के पास आकर रहने लगी तो तीनों भाइयों में मन-मुटाव पैदा हो गया। बात यह थी कि नूरो निहार बहुत सुन्दर थी। उसका गोरा रंग, सुन्दर चेहरा-मोहरा और मीठी बोल-चाल सभी का मन मोह लेती थी। तीनों शहजादे उससे प्रेम करने लगे थे और हर शहजादा यह आशा करता था कि एक दिन उसका ब्याह नूरो निहार से हो जाएगा।

सुलतान को पता लग गया कि तीनों शहजादे नूरो निहार को चाहते हैं और इसलिए एक दूसरे से लड़ते-झगड़ते हैं। सुलतान तीनों शहजादों को एक जैसा प्यार करता था और वह नहीं चाहता था कि वह किसी एक शहजादे के हक में फैसला कर दे। सुलतान ने तीनों शहजादों को बुलाकर कहा, "मैं जानता हूं कि तुम में से हर एक चाहता है कि उसके साथ नूरो निहार का ब्याह हो। पर ब्याह तो किसी एक के साथ ही होगा। इसलिए मैंने फैसला किया है कि तुम तीनों की परीक्षा लूंगा। जो जीतेगा उसी के साथ नूरो निहार का ब्याह कर दूंगा।

"तुम तीनों दूसरे देशों में जाओ और मेरे लिए एक-एक बढ़िया चीज लाओ। जिसकी लाई चीज मुझे सबसे ज्यादा पसन्द आयेगी उसी से नूरो निहार का ब्याह होगा।"

सुलतान ने सबको बराबर रुपये और नौकर-चाकर देकर विदा किया।

तीनों शहजादे दूसरे दिन सवेरे ही यात्रा

पर निकल पड़े।

पहले दिन वे साथ-साथ चलते रहे। रात को एक सराय में ठहर गए। उन तीनों ने फैसला किया कि एक साल बाद लौटकर इसी सराय में इकट्ठे होंगे और साथ-साथ सुलतान के पास जाएँगे।

सबसे बड़ा शहजादा हुसैन रेगिस्तान, पहाड़ों, मैदानों और समुद्रों में तीन महीने सफर करने के बाद बिसनगर में पहुँचा और समुद्र के किनारे बसे इस नगर में मकान किराये पर लेकर वहीं रहने लगा।

बिसनगर की शान-बान निराली थी। धनी-मानी लोग यहाँ रहते थे। बाजार कीमती चीजों से भरे हुए थे। सोना-चाँदी और हीरे-मोती एक बाजार में, रेशमी और जरी-गोटे वाले कपड़े दूसरे बाजार में, खाने-पीने की चीजें तीसरे बाजार में मिलती थीं। जौहरी बाजार और कपड़ा बाजार को देखकर हुसैन की आँखें खुली की खुली रह गयीं। ऐसी कीमती चीजें उसने आज

तक नहीं देखी थी।

वह रोज बाजारों के चक्कर काटता। उसे पूरा भरोसा था कि यहाँ उसे ऐसी कीमती और मुश्किल से मिलने वाली कोई अनोखी चीज मिल जाएगी, जिसे सुलतान को भेंट करके वह नूरोनिहार को ब्याह लेगा वह कई दिनों बाजारों के चक्कर काटता रहा पर उसे कोई चीज ऐसी नहीं लगी जो अनोखी हो।

एक दिन वह बाजारों में घूम-घूमकर थक चला था और एक दुकान पर बैठा सुस्ता रहा था कि उसने सुन, "गलीचा ले लो गलीचा"

उसने गलीचा देखा और कीमत पूछी। इस छोटे से गलीचे की बहुत ज्यादा कीमत वह आदमी माँग रहा था।

हुसैन ने कहा, "आखिर गलीचे में ऐसी कौन-सी अनोखी खूबी है, जिसके लिए तुम इतनी कीमत मांग रहे हो?"

"खूबी है, तभी-तो मांग रहा हूँ।" बेचने वाला कहने लगा, "यह गलीचा जादुई है।

इस पर बैठकर कोई जहाँ जाना चाहे, वहाँ जा सकता है। उड़न खटोले की तरह यह उड़ कर मन चाही जगह पहुँचा देता है।"

"अच्छा! तो यह बात है। अगर तुम्हारी बात सच है तो मैं तुम्हें मुँह मांगी कीमत के अलावा इनाम भी दूँगा।"

"जनाब अगर आप मेरी बात की सचाई को परखना चाहते हैं तो आइए और मेरे साथ इस पर बैठिए। यह आपको, आपके घर तक उड़ाकर ले जाएगा।" व्यापारी बोला।

हुसैन ने बात मान ली। व्यापारी ने गलीचा बिछा दिया और दोनों उस पर बैठ गये। गलीचा उड़ने लगा और हुसैन के किराये के मकान की छत पर जा उतरा।

हुसैन ने सोचा। काम बन गया। अब्बा जान जब इस गलीचे की करामात देखेंगे तो खुश हो जाएँगे। ऐसी गजब की चीज दूसरे भाई सारी दुनियाँ छान मारें तब भी नहीं ला सकते। अब भरोसे के साथ कहा जा सकता है कि नूरो निहार का ब्याह मेरे साथ

होगा।

हुसैन ने व्यापारी को मुँह मांगी कीमत के इलावा बीस सोने की मोहरें इनाम में दीं और गलीचा ले लिया।

हुसैन जिस काम के लिए निकला था, वह पूरा हो गया। पर पूरा साल होने में अभी कुछ महीने बाकी थे। इसलिए उसने बाकी दिन भी वहीं रहकर काटने का निश्चय किया।

मंझला अली सराय से पश्चिम की ओर चला। कई दिनों तक काफिले के साथ चलते-चलते वह शीराज नगर में पहुंचा। काफिले के व्यापारियों के साथ ही उसने डेरा डाला।

एक दिन जब वह शीराज के जौहरी बाजार में घूम रहा था तो उसने एक आदमी को जोर-जोर से चिल्लाते सुना। वह हाथी दांत की एक हाथ भर लम्बी नली को बेचना चाहता था। उस नली के बड़े ऊँचे दाम मांग रहा था।

अली ने कहा, "तुम इस छोटी-सी नली

के बहुत ज्यादा दाम माँग रहे हो भाई ! तुम पागल तो नहीं हो गए हो। इतने दाम तुम्हें कोई क्यों देगा ?"

व्यापारी बोला, "श्रीमान ! मेरा दिमाग बिल्कुल चुस्त और दुरुस्त है। मैं ठीक दाम माँग रहा हूं और इससे एक पैसा भी कम नहीं लूंगा। आप का जी चाहे तो खरीदिए, नहीं तो अपना रास्ता नापिए। रत्न की परख जौहरी ही कर सकता है। आपने मुझे पागल कहा और बहुतेरे नासमझ भी यही कहते रहे हैं। मुझे खुशी होती अगर आप मुझसे पूछते कि इस छोटी-सी नली में ऐसी क्या खूबी है, जिसके लिए मैं इतने दाम माँग रहा हूँ। पर यह बात आपने नहीं पूछी।"

अली शर्मिन्दा हुआ। बोला, "श्रीमान ! मुझ से गलती हुई। अब आप कृपा करके बतलाइए कि इसमें क्या खूबी है।"

व्यापारी बोला, "लीजिए, सुनिए भी और देखिए भी। इस नली के सिरे पर शीशा लगा हुआ है। इस शीशे में देखें तो चाहे जगह

कितनी ही दूर हो, जिसे देखना चाहें, वह दिखाई देता है।"

अली ने कहा, "अगर तुम्हारी बात सच प्रमाणित होती है तो मैं इस खरीद लूंगा। अब मुझे दिखाओ कि मेरे पिता इस समय क्या कर रहे हैं?"

व्यापारी ने नली का एक सिरा अली की आँख से लगा दिया।

अली ने देखा कि उसके पिता शाही तख्त पर बैठे हुए हैं और राज कर्मचारी उनके चारों ओर अपनी-अपनी जगह बैठे हुए हैं। फिर उसने अपने दिल की मलिका नूरोनिहार को देखना चाहा। नूरो निहार को देखे उसे बहुत दिन हो गए थे और वह उसके लिए बेचैन रहता था। आज उसे इतनी दूर से भी अपनी चहेती को देखने का सुनहरी अवसर मिला था। उसने देखा :

नूरो निहार शीशे के सामने बैठी नौकरानियों से अपना सिंगार करा रही थी। अली उसकी प्यारी सूरत को देखकर बहुत प्रसन्न

हुआ। उसने सोचा, अब वह दिन दूर नहीं जब नूरो निहार से मेरी शादी हो जाएगी और वह हमेशा-हमेशा के लिए मेरी हो जाएगी।" शहजादे अली को पूरा विश्वास था कि ऐसी अनोखी चीज दूसरा कोई भी भाई नहीं ला सकेगा और पिता इसे देखकर बाग-बाग हो जाएंगे और मैं शर्त जीत जाऊंगा। बस फिर नूरो निहार मेरी और मैं नूरोनिहार का हो जाऊंगा। वह मन ही मन बहुत प्रसन्न हो रहा था।

उसने व्यापारी को मुंह मांगे दाम दिए। और वह दूरबीन खरीद ली।

सबसे छोटा शहजादा अहमद जब भाइयों से अलग हुआ तो समरकन्द की ओर चल पड़ा। रास्ते में तरह-तरह की मुसीबतें उठा कर वह कई दिनों बाद समरकन्द जा पहुंचा।

वह समरकन्द के बाजारों में घूम-घूमकर कोई ऐसी चीज खोजने लगा जो अनोखी और निराली हो। पर कई दिन बाजारों के चक्कर लगाने के बाद भी उसे ऐसी कोई चीज दिखाई नहीं दी। अब तो उसे बड़ी बेचैनी मालूम

पड़ी। उसे लगा की नूरोनिहार से अब शादी होना कठिन है। फिर भी वह अनमना उदास-सा बाजारों में घूमता रहा। एक दिन पटरी पर बाजार में उसने भीड़ इकठी देखी। वह भीड़ में जा खड़ा हुआ। एक दुकानदार एक सेब बेच रहा था पर कीमत इतनी माँग रहा था कि उतनी कीमत से सेबों के कई बगीचे खरीदे जा सकते थे। अहमद ने सोचा, कौन ऐसा आँख का अन्धा और गाँठ का पूरा होगा, जो इस एक सेब की इतनी कीमत दे देगा और फिर यह सेब भी असली नहीं है।

दुकानदार ने गला फाड़ते हुए कहा, "दोस्तो! यह कोई ऐसा-वैसा सेब नहीं है। इसे एक नामी हकीम ने दवाइयों से तैयार किया है। खुदा की मर्जी कि सेब तैयार होने पर हकीम अलशफा खुदा को प्यारे हो गए। वे इस सेब से किसी बीमार को अच्छा करने पहले ही स्वर्ग चले गए। इस सेब की खूबी यह है कि इससे पुरानी से पुरानी और लाइलाज बीमारी भी दूर की जा सकती है। इसे सुंघा

कर दम तोड़ रहे इन्सान को बचाया जा सकता है। सच पूछिए तो इसकी कीमत कोई नहीं दे सकता। फिर भी मैं इसे सस्ते दामों बेच रहा हूं। जरूरत सब कुछ करवाती है साहेबान ! नहीं तो मैं इसे कभी नहीं बेचता। अब आपको निश्चय हो गया होगा कि इस एक सेब की जितनी कीमत मैं मांग रहा हूं, वह बिल्कुल ठीक है बल्कि कुछ कम ही है।"

अहमद ने कहा, "पहले यह प्रमाणित कीजिए कि आप जो कुछ कह रहे हैं, वह सोलह आने सच है। अगर यह प्रमाणित कर दें कि यह सेब हर बीमारी को ठीक कर सकता है तो मैं आपको मुंह मांगे दाम देने के लिए तैयार हूं।"

दुकानदार ने कहा, "ठीक है। जो लोग यहां खड़े हैं, उनमें से किसीके घर पर कोई बीमार पड़ा हो तो वह आगे आए। मैं अभी साथ चल कर इस सेब से उसकी बीमारी दूर किए देता हूं।"

भीड़ में से एक आदमी आगे बढ़ा। उस

का एक मित्र बड़ी देर से बीमार था और शहर के बड़े-बड़े हकीमों का इलाज कराने पर भी ठीक नहीं हो रहा था।

दुकानदार और अहमद उस आदमी के साथ उसके मित्र के घर गए। दुकानदार ने सेब बीमार को सुंघाया और वह तुरन्त ठीक हो गया। अहमद को विश्वास हो गया कि दुकानदार जो कुछ कह रहा था, वह ठीक है। उसने दुकनदार को मुंह मांगी कीमत दी और सेब ले लिया।

अहमद मन में सोचने लगा, दुनिया में इस सेब से बढ़कर अनोखी कोई चीज नहीं हो सकती। अब इस बात में जरा भी सन्देह नहीं किया जा सकता कि नूरो निहार से मेरी शादी होकर रहेगी।

इसके बाद कुछ दिन वह समरकन्द में इधर-उधर सैर-सपाटा करता रहा। फिर अपने देश भारत की ओर जा रहे एक काफिले के साथ-साथ वापस लौटने लगा।

वह ठीक समय पर उस सराय में जा पहुँचा

जहाँ इकट्ठे होने की बात तीनों भाइयों ने तय की थी।

जब वह सराय में पहुंचा तो दोनों बड़े भाई वहाँ पहले ही पहुंचे हुए थे। तीनों एक दूसरे से गले मिले। एक दूसरे की खैर-खबर पूछी और बातें करने लगे।

हुसैन ने कहा, "भई, बातें करने को तो अब हमें खूब समय मिलेगा। पहले सब अपनी अपनी लाई चीजें दिखाओ। यह अली मुझसे जिद कर रहा था कि मैं तुम्हारे आने से पहले ही इसे अपनी चीज दिखा दूँ पर मैंने कहा कि जब तक तीनों इकट्ठे नहीं हो जाते मैं नहीं दिखाऊँगा। मुझे तो यहाँ पहुँचे हुए भी बहुत दिन हो गए। अली भी कुछ दिन पहले पहुंच गया था। तुम्हीं सबसे बाद आए हो। तो सबसे पहले मैं आपको अपनी लाई हुई चीज दिखाता हूँ।" यह कह कर हुसैन ने गलीचा उन्हें खोलकर दिखाया।

वह अभी गलीचे को बिछा ही रहा था कि अली और अहमद एक दूसरे की ओर देख

कर मुस्कराए। उन्हें यह गलीचा बहुत ही मामूली-सा लगा।

लेकिन जब हुसैन ने उसे अच्छी तरह बिछाने के बाद बताया, "यह गलीचा ऐसा अनोखा है कि सुनकर आप सोचेंगे कि दुनिया भर में इससे अनोखी कोई दूसरी चीज नहीं होगी। इसकी खूबी यह है कि इस पर बैठकर आप जहाँ कहीं भी जाना चाहें यह आपको वहीं पहुँचा देगा। उड़न खटोले की तरह यह आसमान में उड़ता चला जाता है। मैं समझता हूँ ऐसी निराली चीज इससे पहले आपने न सुनी होगी और न देखी होगी। मैंने इसके लिए रुपयों से भरी चालीस थैलियाँ दी हैं। बिसनगर में मैंने इसे खरीदा था। जब मुझे आना था तो मैंने इसे बिछा दिया और नौकरों चाकरों समेत इस पर आ बैठा। बस, मैंने सोचा कि मैं सराय में पहुंच जाऊं। यह उड़ा और हम सब सराय में आ पहुँचे।"

हुसैन अपनी बात कह चुका तो अली ने अपनी बात शुरू की, "यह गलीचा वाकई

कमाल की चीज है। पर इससे भी निराली चीज मेरे पास है। उसने अपनी दूरबीन निकाली और दिखाते हुए बोला, "मेरे पास यह हाथी दांत की नली है। इसमें शीशा लगा हुआ है। इसकी खूबी यह है कि इसमें देखने पर दूर से दूर की चीज भी दिखाई दे जाती है— सैकड़ों हजारों मील दूर की भी। अब आप इसमें से जो कुछ देखना चाहें देख सकते हैं।" यह कहते हुए अली ने दूरबीन हुसैन के हाथ में थमा दी।

हुसैन ने सोचा, बहुत देर से नूरो निहार को नहीं देखा। सबसे पहले उसे ही देखता हूँ। उसने दूरबीन आँख से लगाई और देखने लगा। दूरबीन से नूरो निहार को देखकर हुसैन का चेहरा एकदम उतर गया। उस की चीख निकल गई। वह रुआंसा-सा होकर बोला, "भाइयो, जिस नूरो निहार को हम प्राणों से प्यारा समझते हैं और जिसे पाने के लिए साल भर से दर-दर की खाक छान रहे हैं, वह कुछ ही दिनों की मेहमान है। मौत की

छाया उसके ऊपर मंडरा रही है। वह बहुत बीमार है। यह लो दूरबीन और अपनी आंखों से देख लो।"

यह कहकर उसने दूरबीन अली के हाथ में थमा दी।

अली ने दूरबीन लगाकर देखा, "बड़े-बड़े हकीम और नौकर-चाकर उसके पलंग के पास उपस्थित थे। सभी की आंखों से आंसू बह रहे थे। लगता था कि नूरोनिहार अभी दम तोड़ देगी। अली ने दूरबीन अहमद के हाथ में थमा दी ताकि वह भी इस दुःख-जनक दृश्य को अपनी आंखों से देख सके। अहमद ने दूरबीन आंख से लगाए हुए कहा, "तुम बिल-कुल ठीक कह रहे हो। नूरोनिहार अब कुछ ही देर की मेहमान है। हमें तुरन्त उसे बचाने का प्रयत्न करना चाहिए। मेरे पास यह जो सेब है, इसमें किसी भी बीमारी को दूर करने की शक्ति है। बस, इसे सूंघने-भर की देर है कि बीमार ठीक हो जाता है। मैं इसकी पहले भी परीक्षा कर चुका हूं। मैं दावे के

साथ कह सकता हूँ कि मैं नूरोनिहार को बचा सकता हूँ। मेरा सेब मौत को भगा सकता है।"

हुसैन ने कहा, "फिर तो काम बन गया। हम इस गलीचे पर बैठकर कुछ ही देर में वहाँ पहुँच जाएंगे। जल्दी करो। नौकरों को कह दो कि वे चलकर महल में पहुँचें। हम तीनों गलीचे पर उड़कर चलते हैं। तुम इस सेब को साथ ले लो।"

अहमद ने झट-पट गलीचा बिछा दिया। तीनों भाई उस पर जा बैठे और गलीचा उड़ चला।

वे तीनों जब महल में पहुँचे तो सबको बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि उनके आने की सूचना किसी को नहीं थी।

अहमद पलक झपकते सेब को लेकर नूरोनिहार के कमरे में पहुँचा और मुर्दा-सी पड़ी नूरोनिहार को सेब सुँघाने लगा।

पल-भर में नूरोनिहार ने धीरे-धीरे अपनी आँखें खोलीं। वह बिस्तर पर उठ बैठी और

ऐसे बोलने लगी, जैसे लम्बी-गहरी नींद से सोकर उठी हो। इतने में हुसैन और अली भी आ पहुँचे।

तीनों ने दूरबीन से देखने पर नूरोनिहार की बीमारी का पता लगने, गलीचे पर उड़कर आने और सेब को सूंघकर बीमारी दूर करने की बात नूरोनिहार को बताई। उसने तीनों शहज़ादों का बहुत-बहुत धन्यवाद किया।

□ □ □

अब तीनों भाई अपनी-अपनी चीजें लेकर पिता सुलतान के पास पहुँचे।

सुलतान के पास पहले ही खबर पहुँच चुकी थी कि तीनों शहज़ादे आ गए हैं और अहमद ने एक सेब सुंघाकर नूरोनिहार को स्वस्थ कर दिया है।

सुलतान नूरोनिहार को अपनी बेटी की तरह चाहता था और उसके ठीक होने की खबर सुनकर बहुत प्रसन्न था।

तीनों शहज़ादों ने अपनी-अपनी चीजें सुलतान को दिखाईं और नूरोनिहार की

बीमारी का दूरबीन से पता लगाने, गलीचे पर बैठकर उड़कर आने और सेब सुंघाकर ठीक करने की सारी कहानी सुना दी।

तीनों यह जानने के लिए बेचैन थे कि सुलतान किसकी भेंट को सबसे ज्यादा पसन्द करते हैं और नूरोनिहार की शादी किससे होती है। वे फैसला सुनने के लिए एकटक उनके मुँह की ओर देख रहे थे।

कुछ देर सोचने के बाद सुलतान ने कहा, "यह ठीक है कि अहमद के सेब से नूरोनिहार को नया जीवन मिला और वह मरते-मरते बची; लेकिन अगर अली की दूरबीन से उसकी बीमारी का पता न चलता तो सेब में बीमारी दूर करने की शक्ति होते हुए भी कुछ नहीं हो सकता था और पता लगने पर भी अगर हुसैन के गलीचे पर तुम तीनों उड़कर न पहुँचते तो वह दम तोड़ देती। इसलिए मैं समझता हूँ कि तुम तीनों की लाई हुई चीजें अनोखी हैं। मैं किसी की चीज को बढ़िया और किसी की चीज को घटिया नहीं

कह सकता। इसलिए न तो मैं और न शहजादी नूरोनिहार ही कोई फैसला कर सकती है कि तुम तीनों में से उसका विवाह किसके साथ किया जाए।"

"अब मैं इस बात का फैसला करने के लिए कि तुममें से नूरोनिहार की शादी किससे की जाए कोई और तरीका ढूंढ़ता हूँ।"

फिर कुछ देर सोचने के बाद सुलतान ने कहा, "तुम तीनों अपने-अपने तीर-कमान लेकर कल सुबह शहर के बाहर वाले मैदान में पहुँच जाओ। तुम तीनों में से जिसका तीर सबसे ज्यादा दूर जाकर गिरेगा, उसी से नूरोनिहार की शादी कर दी जाएगी।"

"तुम तीनों मेरे लिए जो तीन अनोखी भेंटें लाए हो, इससे मैं तुम सब पर बहुत ही प्रसन्न हूँ। मैं उन चीजों को खूब संभालकर रखूँगा।"

शहजादों की प्रतियोगिता होने की खबर सारे शहर में फैल गई। यह प्रतियोगिता देखने के लिए शहर के सैकड़ों लोग उस

मैदान में आ पहुँचे। तीन शहज़ादे भी अपने-अपने तीर-कमान लिए आ गए।

सुलतान ने तीनों को एक पंक्ति में खड़ा करके कहा, "सबसे बड़ा होने की वजह से हुसैन पहले तीर छोड़ेगा, बाद में मंझला होने से अली और सबसे बाद में अहमद तीर छोड़ेगा।"

तीनों शहज़ादों ने बारी-बारी तीर छोड़े। सबसे छोटे शहजादे अहमद का तीर सबसे दूर जाकर गिरा पर खोजने पर वह मिला नहीं। इसलिए सुलतान ने फैसला सुनाया कि नूरोनिहार की शादी अली से की जाएगी, क्योंकि उसका तीर हुसैन के तीर से आगे निकल गया था।

हुसैन और अहमद को दुःख तो था पर उन्होंने अपने पिता सुलतान के फैसले को प्रसन्नता से मान लिया। दोनों ने जीत पर अली को बधाई दी।

हुसैन ने अपने बड़ा शहजादा होने के सारे अधिकार छोड़ दिए और अपना टूटा

दिल लेकर राज्य से बाहर चला गया।

अहमद का दुःख और भी गहरा था। वह बेचारा जीतकर भी हार गया था। सब जानते थे कि उसका तीर सबसे दूर जाकर गिरा था, पर वह किसी को मिला नहीं, इसलिए नूरोनिहार उसे नहीं मिली। वह भी अपने खोए तीर को खोजने के लिए चल पड़ा। खोजते-खोजते बहुत दूर पथरीली ऊंची-नीची जमीन में उसे अपना तीर मिल गया। तीर इतनी अधिक दूर गिरा था कि विश्वास नहीं होता था कि किसी आदमी का छोड़ा तीर इतनी दूरी पर गिर सकता है। अहमद ने सोचा, हो न हो, इसमें कुछ रहस्य है। खुदा की मर्जी को कौन जान सकता है। हो सकता है कि आज जो मुझे नूरो निहार को न पाने का बेहद दुःख है कल को किसी बेहद प्रसन्नता में बदल जाए।

अपने तीर को उठाकर वह इस तरह की बात सोचकर कुछ आगे बढ़ा ही था, कि उसे चट्टानों के बीच एक सुरंग दिखाई दी। वह

उसमें घुस कर चलता गया। आखिर में उसे एक लोहे का दरवाजा दिखाई दिया जिसमें कोई ताला नहीं लगा हुआ था। थोड़ा-सा धकेलने पर वह खुल गया। अहमद भीतर चला गया। भीतर जाकर उसने अपने को एक बहुत सुन्दर महल के आंगन में खड़ा पाया।

वह महल की ड्योढ़ी में पहुंचा ही था कि एक बहुत सुन्दर युवती दासियों से घिरी हुई उसका स्वागत करने लगी और बोली, "शहजादे अहमद, भीतर आ जाओ। तुम्हारा स्वागत है।"

अहमद ने इस युवती को पहले कभी देखा-सुना नहीं था। इसलिए उसका नाम लेकर पुकारने पर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। अहमद ने थोड़ा झुककर उसे सलाम किया और बोला, "श्रीमती जी, स्वागत के लिए आपका धन्यवाद। पर क्या आप कृपा करके यह बताने का कष्ट करेंगी कि आप मेरा नाम कैसे जानती हैं? मैं चकित हूं कि मैंने इससे पहले

कभी न आपको देखा और न आपके बारे में सुना फिर आप मेरे बारे में कैसे जानती हैं ?"

"शहज़ादे ! अन्दर चलकर आराम से बैठो। फिर मैं सारी बात बताऊंगी।" उस अत्यन्त सुन्दर युवती ने बड़ी नम्रता और मिठास से कहा।

एक बढ़िया गद्देदार कुर्सी पर जब दोनों बैठ गये तब उस सुन्दर युवती ने कहा, "तुम्हें हैरानी हो रही है न कि मैं तुम्हें कैसे जानती हूं। तुम्हें यह जानकर और भी हैरानी होगी, कि मैं तुम्हारे भाइयों के बारे में भी जानती हूं और यह भी जानती हूं कि शहज़ादी नूरो निहार को पाने के लिए तुम लोग कहां-कहां घूमे और क्या कुछ किया। वह मैं ही थी जिसने गलीचा, दूरबीन और वह सेब बेचने के लिए भेजे थे और सुनो। वह भी मैं ही थी जिसने तुम्हारे इस तीर को इतनी दूर ला फेंका, क्योंकि मैं तुम्हें उससे भी बड़ा सुख देना चाहती हूं जितना तुम्हें नूरो निहार से ब्याह करके मिलता।

"इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है कि मैं तो तुम्हारे बारे में सब कुछ जानती हूँ और तुम मेरे बारे में कुछ नहीं जानते। इसका कारण यह है कि मैं एक परी हूँ। मेरा नाम है बानो। मैं एक जिन की बेटी हूं। हमारे यहां यह रिवाज है कि युवतियां ही शादी के लिए दूल्हों को पसन्द करती हैं। क्योंकि मैं तुम्हें मन से चाहती हूँ इसलिए मेरी इच्छा है कि तुम मुझसे शादी कर लो। मैं आशा करती हूँ कि तुम मेरा पति बनना स्वीकार करोगे।"

अहमद ने जिस समय से बानो को देखा था वह उसकी सुन्दरता पर लट्टू हो चुका था। इस लिए वह झट मान गया।

बड़ी सादगी से अहमद और बानो की शादी हो गयी। परियों की दुनियां में शादी के अवसर पर ज्यादा धूम-धड़ाका नहीं होता। मेहमानों के लिए खाना तैयार होने में अभी कुछ देरी थी, इसलिए बानो अहमद को अपना महल दिखाने ले गई। यह महल बहुत लम्बा-चौड़ा था। अनगिनत कमरे इस महल

में थे। एक से एक कीमती पर्दों और सामानों से सजा यह महल किसी बादशाह के महल को भी मात करता था। अब अहमद को अपने भाई अली से कोई जलन नहीं थी क्योंकि बानो नूरोनिहार से अधिक सुन्दर और अधिक मालदार थी।

उन दोनों को साथ रहते छः महीने बीत गए। अब अहमद को बूढ़े पिता की याद सताने लगी। उसने बानो को बताया कि वह अपने पिता से मिलने चाहता है। वह आँसू बहाती हुई उसे छोड़कर जाने से मना करती रही। उसे डर था कि कहीं ऐसा न हो कि यह लौटकर ही न आए।

अहमद बानो को दिल से चाहता था और उसकी आँखों में आँसू देखकर अहमद ने वहाँ से पिता के पास जाने का ख्याल छोड़ दिया। वह बानो के दिल को जरा भी ठेस नहीं पहुँचाना चाहता था।

वे जब भी बैठकर आपस में बातें करते तो अहमद अपने पिता—बूढ़े सुल्तान—की

बात करने लगता। उसे अपने पिता से बड़ा लगाव था और वह यह सोचकर उदास हो जाता कि बुढ़ापे में वह पिता को छोड़कर घर से दूर चला आया। उसके बिना बताए आ जाने से पिता उसके लिए दुःखी होंगे।

उधर बूढ़ा सुलतान भी अपने छोटे शहजादे के एकाएक गायब हो जाने से बड़ा दुःखी था। सुलतान का बड़ा शहजादा हुसैन भी देश छोड़ गया था। इसलिए सुलतान दोनों शहजादों को याद करके घंटों आँसू बहाता रहता। उसने आस-पास के देशों में अपने आदमी भेजकर अहमद की तलाश करवाई थी। पर किसी को कुछ पता न चला। उसने आज्ञा दे रखी थी कि शहजादा अहमद जहाँ कहीं मिले उसे उसी वक्त घर लौटा लाया जाए।

आखिर में सुलतान ने अपने बड़े मंत्री को बुलाकर कहा, "मंत्री साहब, आप अच्छी तरह जानते हैं कि मुझे छोटा शहजादा अहमद कितना प्यारा है। मैंने उसका पता लगाने का बहुत प्रयत्न किया पर सब बेकार। अगर

वापस नहीं आया तो मैं इसके दुःख से मर जाऊंगा। मुझ पर दया कीजिए। जैसे भी हो उसे खोजकर घर वापिस लाइए।"

मंत्री सुलतान की बड़ी कद्र करता था और उसके दुःख से खुद भी दुःखी था। उसने एक जादूगरनी को बुलाया और शहजादे का पता लगाने को कहा।

जादूगरनी ने दूसरे दिन आकर बताया कि शहजादा जिन्दा है और जल्दी ही सुलतान से मिलने आएगा।

□ □ □

उधर बानो ने देखा कि शहजादा अहमद उसे खूब चाहता है और उसकी मर्जी के बिना अपने पिता के पास नहीं जाना चाहता लेकिन पिता की याद उसे दिन-रात आती रहती है तो उसने फैसला किया कि कुछ दिनों के लिए उसे पिता से मिलने जाने दिया जाए।

उसने शहजादे से पक्का वायदा करा लिया कि वह जल्दी ही वापस आ जाएगा और सुलतान को अपनी शादी के बारे में

कुछ नहीं बताएगा।

अहमद ने कहा, "जैसा तुम कह रही हो, मैं वैसा ही करूँगा। मेरा जाने का मतलब तो सिर्फ इतना है कि पिता मुझे जीवित और प्रसन्न देखकर मेरे बारे में चिन्ता करना छोड़ दें। मैं कुछ दिन उनके पास रहकर वापस लौट आऊँगा और तुम्हारे बारे में उनसे बात तक नहीं करूँगा।"

शहजादे अहमद के लिए एक बढ़िया सफेद घोड़ा मंगवाया गया। बढ़िया वर्दी वाले बीस घुड़सवार उसके साथ चले। जगह बहुत दूर नहीं थी, इसलिए धीरे-धीरे ही चल रहे थे। वे ज्योंही शहर में पहुँचे, देर से बिछुड़े शहजादे को पहचानकर शहरियों की भीड़ उनके पीछे चलने लगी।

जब अहमद अपने पिता के पास पहुँचा तो भी लोगों की भीड़ साथ थी।

सुलतान को अपने छोटे शहजादे से कई महीनों बाद मिलकर अति प्रसन्नता हुई। उसने बेटे को कसकर छाती से लगा लिया

और उसकी आँखों में खुशी के आँसू छलकने लगे।

सुलतान ने अहमद से पूछा, "बेटे! तुम बिना बताए कहाँ चले गए। तुम्हारे लिए रोते-रोते मेरी तो आँखें भी फूटने लगीं। मेरा दिन का चैन और रात की नींद भी तुम्हारे साथ ही चली गई थी। तुम्हें बूढ़े पिता पर जरा भी तरस नहीं आया।"

"पिताजी!" अहमद ने आँखें नीची करके कहा, "मैं नहीं चाहता था कि मेरे यहाँ रहने से भाई के साथ कोई लड़ाई-झगड़ा हो। मैं अपने तीर को ढूँढ़ता-ढूँढ़ता दूर निकल गया था। आखिर वह तीर मुझे मिल गया। साधारणतया तीर उतनी दूर नहीं जा सकता, जितनी दूर वह मुझे मिला। मैंने इसमें भी कुछ भलाई समझी और मैंने ठीक ही समझा था। मुझे उसी जगह दुनिया की सारी प्रसन्नताएँ मिल गईं। मैं समझता हूँ कि मैं हिन्दुस्तान का सबसे सुखी आदमी हूँ। मेरे वापस आने का कारण यह है कि

आप मेरी ओर से निश्चिन्त हो जाएँ। मैं आपसे प्रार्थना करूँगा कि इससे अधिक मुझसे कुछ न पूछें। इससे अधिक मैं कुछ बता भी नहीं सकूँगा।

अब मैं बीच-बीच में आपके पास आता रहूँगा और जो सेवा आप बताएँगे करूँगा।"

सुलतान ने अपने छोटे शहज़ादे का भेद जानने का बहुत प्रयत्न किया पर वह कुछ भी नहीं जान सका। अन्त में उसने अहमद को दोबारा जल्दी ही फिर आने को कह कर, वापस जाने की आज्ञा दे दी। सुलतान ने कहा, "अगर तुम बीच-बीच में आकर मिलते रहोगे तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी।"

अहमद कुछ दिनों बाद बानो के पास जा पहुँचा। वह उसके जल्दी वापस आ जाने पर बड़ी प्रसन्न हुई। उसने कहा, "अगर आप इसी तरह जल्दी वापस आ जाया करें, तो मैं आपको हर महीने जाने दूँगी।"

अहमद हर बार बढ़िया-बढ़िया कपड़े पहनकर और घुड़सवारों को लेकर सुलतान

से मिलने जाता रहा। सुलतान अहमद के आने पर बहुत प्रसन्न होता पर उसके कुछ मंत्री अहमद के ठाठ-बाठ को देखकर जलते। उन मंत्रियों ने अहमद के विरुद्ध सुलतान के कान भरने शुरू किए। उन्होंने कहा, "किसी दिन प्रजा के लोग आपको गद्दी से उतारकर अहमद को अपना सुलतान बना लेंगे।"

सुलतान ने उन्हें झाड़ दिया। बोला, "तुम्हारा इस तरह सोचना गलत है। मेरा बेटा ऐसा नहीं है। मुझे उस पर पूरा भरोसा है। वह कभी ऐसा नहीं करेगा।"

पर उन मंत्रियों को जब भी अवसर मिलता, वे अहमद की बुराई करने से नहीं चूकते। उन्होंने सुलतान को समझाया कि अगर उसका दिल साफ है तो वह आपको बताता क्यों नहीं कि वह कहाँ रहता है और क्या करता है। वह इतना धनवान कैसे बन गया और उसके साथ घुड़सवारों की टुकड़ी कहाँ से आती है।

वजीरों की इन सब बातों का सुलतान

पर असर पड़ा और उसने यह पता लगाने का फैसला किया कि अहमद कहाँ जाता है।

इस बार जब अहमद आकर लौटने लगा तो सुलतान ने जादूगरनी को यह पता लगाने के लिए भेजा कि यह कहाँ रहता है।

जादूगरनी घोड़ों के सुम्बों के निशानों को देखकर उसके पीछे-पीछे चलती रही। आखिर सुरंग के पास पहुंचकर घोड़ों के सुम्बो के निशान एकाएक गायब हो गए। जादूगरनी की समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि आखिर चालीस घोड़ों के सुम्बों के निशान यहाँ आकर समाप्त कैसे हो गए।

बात यह थी कि सुरंग का रास्ता उन्हीं लोगों को दिखाई देता था, जिन्हें बानो दिखाना चाहती थी, दूसरों को नहीं। लेकिन जादूगरनी भी कच्ची गोलियाँ नहीं खेली थी। वह उसी जगह जमकर बैठ गई और चारों तरफ नजर रखने लगी।

एक दिन सुबह ही उसे घोड़ों के आने की आवाज सुनाई दी। उसने जब ध्यान से देखा

तो उसे चट्टानों के पास से अहमद और दूसरे घुड़सवार आते दिखाई दिए।

वह झटपट कुछ दूर रास्ते में लेट गई और जोर-जोर से कराहने लगी, जैसे उसे कोई कष्ट हो।

घोड़े पर चढ़े अहमद ने जैसे ही उसे देखा, वह अपने घोड़े से उतर पड़ा और उसके पास पहुंचा। बाकी घुड़सवार भी रुक गए।

अहमद ने उसका हाल-चाल पूछा और बोला, "बताओ तुम कहाँ जाना चाहती हो? मैं तुम्हें घोड़े पर बिठाकर तुम्हारे घर तक पहुँचा दूँगा।"

जादूगरनी बिना कोई जवाब दिए और ज्यादा कराहने और रोने लगी।

अहमद ने समझा कि ज्यादा बीमार है और घोड़े पर नहीं बैठ सकेगी। इसलिए उसने दो घुड़सवारों को कहा कि इसे उठाकर घोड़े पर बिठा दो और बानो के पास ले चलो।

अहमद को थोड़ी ही देर में वापस लौटा देखकर बानो को आश्चर्य हुआ।

अहमद ने बताया कि यह औरत रास्ते में पड़ी थी और मारे दर्द के चीख रही थी। इसलिए मैं इसे उठा लाया हूँ। हमें इसकी सहायता करनी चाहिए।

बानो ने उस औरत को देखते ही समझ लिया कि यह जासूसी करने आई है। पर क्योंकि वह नेक और रहमदिल परी थी, इसलिए उसने उसे पूरा आराम दिया और अच्छी तरह सेवा की। अपनी दो नौकरानियाँ उसकी टहल और दवा-दारू के लिए छोड़ दीं। फिर वह शहजादे अहमद से बोली, "मुझे यह देखकर बड़ी खुशी हुई कि आप बड़े रहमदिल हैं। पर मुझे लगता है कि यह स्त्री हमारे लिए मुसीबत पैदा करेगी। यह झूठ-मूठ की बीमार बनी हुई है। वास्तव में यह बीमार है नहीं। खैर, आप चिन्ता न करें। मैं आपके विरुद्ध किए जा रहे षड्यंत्रों से आपको बचाऊँगी।"

अहमद पर बानो की बातों का कोई असर नहीं पड़ा। वह बोला, "मेरी रानी!

मैंने कभी किसी का बुरा न सोचा न किया। और मैं नहीं समझता कि कोई मेरे साथ बुराई करेगा।" यह कहकर वह घुड़सवारों के साथ सुरंग से बाहर निकल गया और सुलतान के पास जा पहुँचा। वहां उसका खूब स्वागत-सत्कार हुआ।

उधर जादूगरनी की नकली बीमारी जब ठीक हो गई तो उसकी देख-भाल करने वाली नौकरानियाँ उसे एक कमरे में ले आईं। उन्होंने बड़े कीमती प्याले में उसे शर्बत पिलाया। जादूगरनी ने नौकरानियों से कहा, "मैं अब ठीक हो गई हूँ और अपने घर लौटना चाहती हूँ। आपकी मालकिन ने कृपा करके मुझे यहाँ रखा और मेरी जान बचाई। मैं जाते समय उनका धन्यवाद करना चाहती हूँ। इसलिए मुझे उनके पास ले चलिए।"

नौकरानियाँ उसे बानो के खास कमरे में ले गईं। वहाँ बानो हीरों जड़े सोने के सिंहासन पर बैठी हुई थी और एक-से-एक कीमती गहने और कपड़े पहने हुए थी। कमरा कीमती

चीजों से भरा और सजा हुआ था। हीरे-मोतियों की चकाचौंध से जादूगरनी की आँखें चौंधिया गईं और वह दंग रह गई।

बानो ने उस स्त्री से कहा, "मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि तुम अब ठीक हो गई हो और अपने घर वापस जा रही हो। अगर इस महल को देखना चाहो तो मेरी नौकरानी तुम्हें दिखा देगी।"

जादूगरनी के 'हाँ' कहने पर नौकरानी ने उसे सारा महल अच्छी तरह दिखा दिया।

इसके बाद उसे लोहे के दरवाजे तक ले जाकर बाहर छोड़ दिया। पर ज्योंही वह दरवाजे के बाहर निकली, उसे वह दरवाजा दिखना बन्द हो गया। उसने बहुत प्रयत्न किया पर कुछ पता नहीं लगा।

वह वहाँ से चलकर सुलतान के पास पहुँची। उसने सुलतान को सारी बात बता देने के बाद कहा, "मुझे लगता है कि वह परी अहमद को आपकी सलतनत पर अधिकार करने के लिए उकसा रही है। इस बात

पर आपको ध्यान देना चाहिए।"

सुलतान जादूगरनी के काम से बहुत प्रसन्न हुआ और उसे साथ लेकर अपने दरबार में पहुँचा और मंत्रियों को बुलाकर अहमद के बारे में जादूगरनी से सुनी हुई सारी बातें बताईं।

एक मंत्री ने सलाह दी, "अब की बार जब शहजादा आपसे मिलने आए तो उसे जेलखाने में बन्द कर दीजिए और उमर-भर जेल में बन्द रखिए।"

जादूगरनी ने कहा, "यह ठीक नहीं होगा। अगर आप शहजादे को बन्द करते हैं तो उसके साथ के घुड़सवारों को भी बन्द कीजिए। पर आप उन्हें बन्द कर नहीं सकेंगे क्योंकि वे सारे तो जिन हैं। वे अपनी मालकिन परी को सारी बात बता देंगे और वह शहजादे को छुड़ाने का कोई उपाय निकाल लेगी। मेरी सलाह मानें तो ऐसा करें कि शहजादे को कहें कि वह परी की सहायता से कीमती चीजें आपको लाकर दे। बार-बार

नई-नई चीजें जब शहजादा उससे माँगेगा तो वह तंग आ जाएगी और उसे अपने महल में कैद कर लेगी। इस तरह आप अपने हाथों अपने बेटे को सजा देने से बच जाएंगे और वह कभी आप पर चढ़ाई भी नहीं कर सकेगा।"

जादूगरनी की सलाह सुलतान को पसंद आ गई।

अगली बार जब अहमद सुलतान से मिलने आया, तो सुलतान ने कहा, "बेटे! तुमने मुझे अपने बारे में कभी कुछ नहीं बताया पर फिर भी मुझ सब-कुछ मालूम हो गया है। मैं जानता हूँ कि तुमने एक मालदार परी से शादी कर ली है। मुझे इस बात की बड़ी प्रसन्नता है। मैं आशा करता हूँ कि मुझे जब कभी सहायता की जरूरत पड़ेगी तो तुम अपनी बीवी को कहकर मेरा काम करवा ही दोगे।

इस समय उसकी सहायता से तुम एक काम तो करवा ही दो। मुझे एक ऐसे तम्बू की जरूरत है जो भार में इतना हल्का हो कि

एक आदमी उठा सके और तानने पर इतना फैल जाए कि एक पूरी फौज उसके नीचे डेरा डाल सके। यह काम जरा कठिन जरूर है पर मैं समझता हूँ कि तुम्हारी परी रानी तुम्हारे कहने से इसे कर देगी।"

शहजादा अहमद सोचने लगा, "यह तो ठीक है कि परियाँ बहुत-से अनहोने कामों को कर सकती हैं। पर पिताजी ने जो काम बताया है, उसे तो सम्भवत: वह भी न कर सके।"

उसने सुलतान से कहा, "यह ठीक है कि मैंने एक परी से शादी की है। आपको कैसे इस बात का पता लगा, यह तो मैं नहीं जानता। मैं आशा करता हूँ कि आप मुझ पर इस बात के लिए जोर नहीं डालेंगे कि मैं उससे यह काम करने के लिए दबाव डालूँ। अगर मुझे लगा कि वह इस काम को कर सकती है तो कहूँगा। अगर मैं दोबारा यहाँ नहीं आया तो आप समझ लें कि मैं यह काम उससे नहीं करवा सका।

सुलतान ने बड़े प्यार से कहा, "बेटे,

तुम्हें उससे कहने में शर्म नहीं होनी चाहिए। तुम नहीं जानते कि वह तुम्हारे लिए क्या कुछ कर सकती है और तुम्हारा काम कर देने में उसे कितनी प्रसन्नता होगी। तुम उसे एक बार कहकर तो देखो। अगर वह तुम्हें तम्बू नहीं देती है तो समझ लो वह तुम्हें चाहती भी नहीं है और उसका प्यार झूठा है।"

इस बात का अहमद ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह वहाँ से दो दिन पहले ही वापस लौट आया।

जब वह परी के पास पहुँचा तो बहुत उदास था।

बानो ने जब उसके उदास चेहरे को देखा तो वह भी उदास हो गई। इससे पहले तो अहमद जब भी सुलतान के पास से लौटकर आता था तो बहुत प्रसन्न होता था।

उसने अहमद से पूछ ही लिया, 'शाहज़ादे! तुम उदास क्यों हो? तुम्हारे पिता सुलतान तो राजी-खुशी हैं न? मुझसे कोई बात

छिपाओ मत। सच-सच बताओ कि तुम्हारी उदासी का कारण क्या है? तुम्हारे दुःख को दूर करने के लिए मैं पूरा प्रयत्न करूँगी।"

अहमद ने कहा, "खुदा की कृपा है। मेरे पिता बिल्कुल ठीक हैं। पर.....मेरे पूरा प्रयत्न करने पर भी उन्हें पता चल गया है कि मेरी शादी एक परी से हुई है।"

"मैं जानती हूँ कि किसने बताया है। मैंने तुम्हें पहले ही बता दिया था न कि वह जो बीमार स्त्री थी, वह हमारे लिए कठिनाई पैदा करेगी। उसी ने सुलतान को यह बात बताई है। खैर, अब तुम मुझे यह बताओ कि तुम्हारी शादी के बारे में तुम्हारे पिता क्या कहते हैं?" अगर कोई ऐसी बात हो जिसे तुम न बताना चाहो तो रहने दो।"

अहमद बोला, "भला मैं तुमसे कोई बात छिपा सकता हूं। पहले तो उन्होंने इस पर बड़ी प्रसन्नता दिखाई। फिर बोले कि तुम उस परी से कहकर मेरे लिए एक इतना बड़ा तम्बू लाओ जिसके नीचे पूरी फौज डेरा डाल

सके और उसका बोझ इतना कम हो कि एक आदमी उसे उठा सके।"

परी बानो ने मुस्कराकर कहा, "तो तुम इस छोटी-सी बात के लिए ही इतने उदास थे। ऐसा तम्बू बनाने में मुझे कुछ भी देर नहीं लगेगी। सच मानो, तुम्हारे लिए कोई काम करने में मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी।"

तभी एक नौकर को आवाज देकर बानो ने एक बहुत बड़ा तम्बू लाने की आज्ञा दी। थोड़ी देर के बाद ही नौकर जब तह किया हुआ तम्बू लेकर आया तो शहजादे अहमद की हैरानी का ठिकाना नहीं रहा। वह आँखें फाड़-फाड़कर उस छोटी-सी चीज को देखने लगा। उसे इस पर विश्वास नहीं हो रहा था कि इस तम्बू को तानने पर इसके नीचे पूरी फौज आ सकती है।

बानो ने समझ लिया कि अहमद को विश्वास नहीं आ रहा है। उसने नौकर को तम्बू तानने के लिए कहा। नौकर ने मैदान में तम्बू को तान दिया।

परी ने अहमद को तना हुआ तम्बू दिखाकर कहा, "क्या इस तम्बू से आपके पिताजी की जरूरत पूरी हो जाएगी ?"

अहमद ने देखा कि यह तम्बू तो उससे भी ज्यादा लम्बा-चौड़ा है, जितना सुलतान ने लाने के लिए कहा था। उसके चेहरे की सारी उदासी दूर हो गई और वह मुस्कराने लगा।

बानो ने कहा, "इस तम्बू की खूबी यह है कि इसे जरूरत के अनुसार बढ़ाया या घटाया जा सकता है। इसके लिए कुछ करना भी नहीं पड़ता। इसके नीचे ज्यों-ज्यों ज्यादा आदमी आते जाएंगे यह भी फैलता जाएगा।"

बानो की आज्ञा से नौकर ने तम्बू को फिर समेटकर तह कर दिया। वह फिर जरा-सा दिखने लगा। बानो ने उसे शहजादे को दिया और कहा कि आप इसे सुलतान को दे सकते हैं।

शहजादा अहमद दूसरे ही दिन खुशी-खुशी तम्बू लेकर सुलतान के पास पहुँचा।

जब उसने सुलतान को तम्बू दिया तो सुलतान हैरान रह गया। उसने उसी समय नौकरों को बुलाया और आज्ञा दी कि इसे बड़े मैदान में तान दो। जब तम्बू तन गया तो सुलतान ने देखा कि इसके नीचे तो दो बड़ी फौजें भी डेरा डाल सकती हैं। इससे बजाए खुश होने के, वह सोचने लगा कि इस परी में गजब की शक्ति है। वह तो जो चाहे वह कर सकती है। यह सोचते-सोचते सुलतान का चेहरा उदास हो गया।

उसने शहज़ादे अहमद को कहा कि तुम मेरी तरफ से उस परी का बहुत-बहुत धन्यवाद करना। हाँ, और उसे यह भी कहना कि सुलतान ने कहा है कि उस झरने का थोड़ा-सा पानी भेज दे जिसे पीकर आदमी लम्बी उमर तक जीता रहता है और कभी बीमार नहीं पड़ता। मैं उस पानी को अपने पास रखूंगा और जब जरूरत समझूंगा, पी लूंगा। यह काम जरा है तो कठिन क्योंकि उस झरने की रखवाली चार शेर करते हैं।

फिर भी तुम कहना जरूर। उसके लिए यह काम कठिन नहीं है।"

शहजादा अहमद सुलतान की दूसरी माँग को सुनकर फिर उदास हो गया। वह उदास ही परी के पास पहुँचा।

बानो ने उसे उदास देखकर उदासी का कारण पूछा तो उसने बता दिया। बानो ने उसे निश्चिन्त रहने को कहा और बोली कि इसका इन्तजाम भी हो जाएगा। फिर वह बोली, "सुलतान उस जादूगरनी के कहने से सारे काम कर रहा है। खैर। देखा जाएगा। उस झरने का पानी लाना काफी कठिन काम है। बात यह है कि चार शेर उसकी रखवाली करते रहते हैं। जो कोई वहाँ जाता है, उसे फाड़ खाते हैं। फिर भी चिन्ता करने की कोई बात नहीं है। मुझे मालूम है कि वहाँ से पानी कैसे लाया जा सकता है। मैं तुम्हें एक डोरी दूँगी और एक घोड़ा।

एक भेड़ के चार टुकड़े करके तुम अपने पास रख लेना। चारों शेरों को एक-एक

टुकड़ा डाल देना।

जब शेर भेड़ का माँस खाने लगें तो तुम अपने बर्तन को पानी से भर लेना। तुम्हें चाहिए कि कल सुबह ही चल पड़ो और सुरंग के दरवाजे से बाहर निकलते ही डोरी के गोले को खोलते जाओ, जब तक तुम उस किले के दरवाजे तक न पहुँच जाओ, जिसके भीतर वह झरना है। तुम्हारे पहुँचते ही किले का दरवाजा खुल जाएगा। अन्दर झरने के पास तुम्हें चार शेर दिखाई देंगे। भेड़ के चार टुकड़ों में से एक-एक चारों शेरों के आगे फेंक देना। वे भूखे शेर जब माँस खाने लगें तो चुपके से घोड़े पर चढ़कर झरने के पास पहुँच जाना और बर्तन को पानी से भरकर तुरंत वापस आ जाना। तुम्हारे लौट आने तक भी शेर माँस खा रहे होंगे, इसलिए चुपके से ही बाहर आ जाना।"

दूसरे दिन सवेरे ही अहमद ने बानो के कहने के अनुसार यात्रा शुरू कर दी। उसके सारे काम ठीक होते रहे। लेकिन

वापस आते समय जब उसने पीछे मुड़कर देखा तो दो शेर पीछा करते चले आ रहे थे। उन्होंने अहमद को कुछ नहीं कहा। उनमें से एक शेर अहमद के आगे और एक पीछे चलने लगा। जब अहमद महल के पास सुरंग के दरवाजे के पास आ पहुँचा तो दोनों शेर वहाँ से वापस हो गए।

अहमद के पानी ले आने पर बानो बहुत प्रसन्न हुई। वह उस भयानक जगह से राजी-खुशी वापस आ गया था, इस बात की भी बानो को बहुत प्रसन्नता थी।

दूसरे दिन अहमद उस पानी को लेकर सुलतान के पास गया। सुलतान ने पानी का बर्तन अहमद के हाथ से लेते हुए, उसका बहुत-बहुत धन्यवाद किया। फिर उसे बिठाकर बोला, "बेटे अहमद! मुझे सच-सच बताओ कि तुम उन शेरों से बचकर कैसे आए, जिनके बारे में सुना है कि वे उस झरने की रखवाली करते हैं।"

अहमद ने उत्तर दिया, "पिताजी! मेरी

परी रानी ने मुझे जैसे बताया था, मैंने वैसे ही किया। यही कारण है कि मैं पानी लेकर राजी-खुशी वापस आ गया।"

सुलतान यह सुनते ही दूसरे कमरे में चला गया। उसने जादूगरनी से सलाह ली कि अब शहजादे को क्या काम बताना चाहिए। उसके कहने के अनुसार सुलतान ने अहमद से कहा, "अब की बार एक ऐसा आदमी लेकर आओ जो डेढ़ फुट से लंबा न हो और उसकी मूँछें तीस फुट लम्बी हों। उसने अपने कन्धे पर लोहे की पाँच सौ मन भारी छड़ रखी हो। और वह अच्छी तरह बोल सकता हो। बस, समझ लो कि यह मैंने तुम्हें अन्तिम काम बताया है। इसके बाद कोई और काम नहीं बताऊंगा।"

परेशान अहमद महल में पहुँचा तो बानो ने फिर उसकी परेशानी का कारण जानना चाहा।

शहजादे ने फिर उसे सभी बात बता दी। बानो ने कहा, "कोई चिन्ता मत करो।

यह काम भी हो जाएगा। मेरा भाई शियाबर बिल्कुल ऐसा ही है। मैं उसे भेज दूंगी।"

उसने एक सोने की डिबिया निकाली जो हीरे-लालों से जड़ी हुई थी। उसमें से चुटकी भर कोई चीज निकालकर उसने आग में डाली।

उससे धुएं का एक बादल-सा उठा और उस बादल में से डेढ़ फुट लम्बा और तीस फुट मूंछों वाला एक बौना आदमी निकला। उसने कन्धे पर एक मोटी और भारी लोहे की छड़ रखी हुई थी। वह आदमी गुस्से से एकदम लाल-पीला हो रहा था। उसे देखकर अहमद कुछ घबराया पर वह जानता था कि यह बानो का भाई है और इससे डरने की जरूरत नहीं।

उस आदमी ने जिसका नाम शियाबर था, बानो से पूछा, "यह आदमी कौन है?"

जब बानो ने उसे बताया कि यह उसका पति शहजादा अहमद है तो वह चुप हो गया। फिर थोड़ी देर सोचकर बोला, "मुझे किस-

लिए याद किया है। ऐसा कौन-सा काम पड़ा है ?"

बानो ने उसे बताया कि अहमद के पिता सुलतान तुम्हें देखना चाहता है।

अहमद के साथ-साथ शियावर सुलतान के पास पहुँचा।

शियावर ने सुलतान से पूछा, "बताइये आपने मुझे किस काम के लिए बुलाया है ?"

सुलतान ने शियावर की बात का कोई उत्तर नहीं दिया और उसके भद्दे बर्ताव से चिढ़कर अपना मुँह दूसरी ओर फेर लिया।

इस पर शियावर को क्रोध आ गया। उसने लोहे की छड़ सुलतान के सिर पर दे मारी, जिससे उसका सिर फट गया और वह मर गया। यह काम उसने इतनी फुर्ती से कर डाला कि अहमद को उसे रोकने का समय ही नहीं मिला।

इसके बाद उसने उन मंत्रियों को मार डाला जो सुलतान को अहमद के विरुद्ध भड़काते रहते थे। फिर जादूगरनी की बारी

आई। वह भी मार डाली गई।

इसके बाद सुलतान के सब लोगों को इकट्ठा करके अहमद को गद्दी पर बिठाया गया। सब लोग अहमद के सुलतान बन जाने से बहुत प्रसन्न थे।

अहमद को जब पता लगा कि उसका भाई अली और उसकी बीवी नूरो निहार इस सारी गड़बड़ी में सम्मिलित नहीं थे तो उसने उन्हें सलतनत का एक बड़ा हिस्सा दे दिया। वे दोनों उमर-भर बड़े मजे में अपने दिन गुजारते रहे।

बड़ा भाई हुसैन कभी लौटकर नहीं आया। शहजादा अहमद अब सुलतान बन गया। वह बानो के साथ जिन्दगी-भर सुख-चैन से रहा और सलतन को संभालता रहा।

० ० ०

सबको बुद्धू बनाया

जिन दिनों बगदाद में खलीफा हारूं अल रशीद राज्य करता था, उन दिनों की यह कहानी है।

बगदाद में एक बड़ा धनी व्यापारी रहता था। उसका एक ही बेटा था। बेटे का नाम था अबू हसन। अबू हसन का पिता चाहता था कि मेरा बेटा समझदार-होशियार बने। वह हर समय अबू हसन को कुछ न कुछ सीख देता रहता। पर अबू हसन अमीरों के बेटों की तरह लापरवाह था। वह हंसोड़ और मजाकिया स्वभाव का था। मित्रों से वह घिरा रहता। खूब हंसी-मजाक करता। मित्रों को खूब खिलाता-पिलाता, उनके साथ सैर-सपाटा करता रहता।

अबू हसन का पिता उसे अपने सामने

खड़ा कर लेता और उसकी बुद्धि की परीक्षा लेने के लिए तरह-तरह के प्रश्न पूछता। अबू हसन प्रश्न का ठीक उत्तर न देता तो छड़ी से पिटाई होती।

अबू हसन अभी बीस वर्ष का भी नहीं हुआ था कि उसका पिता मर गया। घर में अपार धन-दौलत थी। अबू हसन को व्यापार करने का तो कोई अनुभव था नहीं। इसलिए उसने सारे धन को दो हिस्सों में बांटा और निश्चय किया कि आधे हिस्से को बचाकर रखूंगा और आधे हिस्से को खर्च करूंगा।

जिसके पास धन-दौलत हो, उसे मित्रों की तो कमी रहती नहीं। दूसरे के पैसों से गुलछर्रे उड़ाने वाले स्वार्थी मित्रों की भीड़ इकट्ठी हो गई। अबू हसन खुले हाथों मित्रों पर खर्च करने लगा। चापलूस मित्र अबू हसन की वाह-वाही करते और अबू हसन के पैसों से मौज उड़ाते।

कुछ दिन तो यह सिलसिला चलता रहा पर ज्योंही पैसे समाप्त होने लगे, मित्रों की

भीड़-भाड़ भी कम होने लगी। इसी तरह एक दिन आया कि अबू हसन की आधी दौलत समाप्त हो गई।

उसने अपने मित्रों को बताया कि खर्च के लिए रखे सारे रुपए समाप्त हो गए हैं। पर मित्रों ने उसकी बात का सुन कर भी अनुसुना कर दिया।

सच तो यह है कि वे अबू हसन के मित्र नहीं अबू हसन के धन के मित्र थे। धन समाप्त हो गया तो मित्र भी समाप्त हो गए।

अब अबू हसन की आँखें खुलीं। उसे पता लग गया कि जिनको वह अपने मित्र समझता था, वे निरे स्वार्थी थे।

स्वार्थी मित्रों के इस व्यवहार से अबू हसन को बड़ा दुःख हुआ और वह उदास रहने लगा।

बेटा चाहे निखट्टू ही क्यों न हो, माँ उसे दुःखी नहीं देख सकती। अबू हसन को दुःखी देखकर उसकी माँ को बड़ी चिन्ता हुई। उसने अबू हसन को खूब समझाया कि स्वार्थी मित्र तो ऐसी ही होते हैं। इसलिए आगे को ऐसे

मित्रों का भरोसा कभी न करना।

उसकी माँ उसे प्रसन्न रखने का प्रयत्न करती। बीती बातों को भुलाकर आगे के लिए सावधान रहने को कहती।

अबू हसन को भी समझ आ गई। नीच मित्रों के साथ से छुट्टी पाकर वह बचाकर रखी आधी दौलत से अपना काम चलाने लगा।

अब उसे किसी भी आदमी पर भरोसा नहीं रह गया था। दूध का जला छाछ को भी फूंक-फूंककर पीता है।

उसने अपने मन में सोचा, अब मैं अनजान, परदेशी लोगों से ही मिला-जुला करूंगा।

बस फिर क्या था! वह प्रतिदिन किसी अनजान राह चलते से ही बात करता। वह प्रतिदिन शाम को बाजार में चला जाता और एक पुलिया पर बैठ जाता। राह चलते किसी अनजान आदमी को देखकर उसे अपने साथ भोजन करने का निमंत्रण देता। उसे अपने

घर ले आता। दोनों बैठकर भोजन करते। कुछ देर इधर-उधर की बातें होती रहतीं। बाद में अनजान आदमी अपनी राह चला जाता और अबू हसन सो जाता।

दूसरे दिन वह फिर किसी नए आदमी को बुला लाता।

ये कुछ घंटों के मेहमान प्रतिदिन आते, बढ़िया खाना खाते, गप-शप मारते और चले जाते।

जो आज आता वह कल नहीं, जो कल आता वह परसों नहीं। कई दिनों तक यही सिलसिला चलता रहा।

एक दिन की बात है कि शाम को अबू हसन प्रतिदिन की तरह उस पुलिया पर बैठा हुआ था। वह किसी अनजान आदमी की खोज में था कि इतने में बगदाद के खलीफा हारूं अल-रशीद अपने नौकरों-चौकरों के साथ सामने से निकले।

वे साधारण लोगों जैसे कपड़े पहने हुए थे।

अबू हसन खलीफा को पहचानता नहीं था।

अबू हसन ने खलीफा को अपने साथ भोजन करने का निमन्त्रण दिया। खलीफा ने निमन्त्रण स्वीकार कर लिया और उसके साथ उसके घर पहुंचे।

खलीफा अबू हसन के घर का ठाट-बाट देखकर दंग रह गया। सोने चांदी के बर्तनों में भोजन परोसा गया। महंगे गलीचों, रेशमी पर्दों और दूसरी कीमती चीजों से घर सजा हुआ था। आंगन के बीचों बीच फुहारा लगा हुआ था। तरह-तरह की स्वादिष्ट चीजें परोसी गईं।

भोजन करने के बाद खलीफा ने कहा "आपने जो स्वादिष्ट भोजन कराया, इसके लिए मैं आप का धन्यवाद करता हूँ। अब मेरे योग्य कोई सेवा बताइए।"

अबू हसन ने कहा, "आप मेरे मित्र नहीं हैं। मैं किसीको मित्र बनाता भी नहीं हूं। दोबारा न तो मैं कभी आप को भोजन के लिए

बुलाऊंगा और न आप से बात ही करूंगा।"

"ऐसा क्यों ?" खलीफा ने पूछा।

अबू हसन ने अपने स्वार्थी मित्रों की कहानी सुनाई। तब खलीफा को पता लगा और उसका आश्चर्य दूर हुआ।

खलीफा ने अपने बारे में अबू हसन को कुछ भी नहीं बताया। अबू हसन ने भी उससे कुछ नहीं पूछा। भोजन के बाद कुछ देर इधर-उधर की बातें होती रहीं। जब खलीफा ने कहा, "अगर तुम्हारी कोई इच्छा हो, कोई काम हो तो बताओ, मैं उसे पूरा करूंगा।

अबू हसन बोला, "मुझे किसी चीज की इच्छा नहीं है। हां, एक काम है अगर कर सकें तो कर दीजिए। हमारे घर के पास ही एक मस्जिद है। वहां का मौलवी मुझे बहुत तंग करता है। मेरे घर में जब गाने-बजाने का कार्यक्रम होता है तो उसकी आवाज सुनकर मौलवी चिढ़ जाता है। वह मेरी शिकायत काजी से करता है और जुर्माना करा देता है। मैं चाहता हूं कि उस मौलवी को यहां से निकाल

दिया जाए।"

खलीफा ने कहा, "आपकी यह इच्छा पूरी कर दी जाएगी।" और तभी खलीफा ने अबू हसन की नजर बचाकर पानी के प्याले में कुछ मिला दिया। उस पानी को पीते ही अबू हसन को नींद आ गई। ज्योंही अबू हसन गहरी नींद में वहीं सो गया त्योंही खलीफा ने अपने नौकरों से कहा कि इसे उठाकर महलों में ले चलो।

खलीफा के नौकर सोए हुए अबू हसन को उठकर महलों में ले गए और खलीफा के पलंग पर सुला दिया।

फिर खलीफा ने नौकरों के अफसर को बुलाकर कहा, "जब अबू हसन जाग जाए तो सारे नौकर ऐसा दिखावा करें कि वही खलीफा है। और वह जो भी आज्ञा दे उसका पालन करें।"

नौकरों को समझा-बुझाकर असली खलीफा हारूं अल रशीद वहाँ से चला गया और छिप गया।

जब अबू हसन सवेरे जागा तो वह अपने को शाही महल में शाही पलंग पर सोया देखकर चकित रह गया। उसके जागकर बैठते ही नौकर-चाकर जमीन तक गर्दनें झुकाकर सलामें करने लगे।

एक नौकर हाथ जोड़कर कहने लगे, "महाराज-सुबह की नमाज का समय हो गया है।"

अबू हसन उसकी बात सुनकर खिलखिलाकर हंस पड़ा। क्योंकि वह अपने को बादशाह नहीं समझता था। उसने अपने चारों ओर देखा। महल खूब सजा हुआ था। रेशमी पर्दे पड़े हुए थे। कीमती साज-सामान से कमरा भरा हुआ था। उसने सोचा, "मैं सपना देख रहा हूं। फिर उसने एक नौकर से पूछा, "बताओ मैं कहां हूं और कौन हूं?"

नौकर ने नम्रता से उत्तर दिया, "महाराज, आप देश के खलीफा हैं और इस समय महल में हैं।"

"तुम झूठ बोल रहे हो।" अबू हसनने कड़क कर कहा।

पर पास खड़े दूसरे नौकर ने कहा, "यह बिल्कुल ठीक कह रहा है। आप ही इस देश के खलीफा हैं।"

अबू हसन चक्कर में पड़ गया। उसने आंखें मलकर फिर चारों ओर देखा। उसे लगा कि वह जाग रहा है और सपना नहीं देख रहा है। उसने सोचा, "मैं कल अबू हसन था। आज खलीफा हूँ। बात क्या है।" नौकर-चाकर उसे कपड़े पहनाने लगे। एक नौकर हीरे जड़े सोने के जूते ले आया। अबू हसन ने सोने के बर्तन में हाथ-मुंह धोए।

नौकरों ने उसे शाही चोगा पहनाया। कलगी वाली रेशमी पगड़ी उसके सिर पर रखी।

अबू हसन ने सोचा, हो न हो, परियों ने मुझे यह राज्य सौंपा हो और खलीफा बना दिया हो। उसे अपने खलीफा होने का कुछ-कुछ विश्वास हो चला।

इतने में एक नौकर आया और पूछने लगा, "कोई काम हो तो हमें आज्ञा दीजिए।

हम तुरन्त आपकी आज्ञा का पालन करेंगे।"

अबू हसन ने सोचा, अपने शत्रुओं से बदला लेने का यह अच्छा अवसर है। उसने आज्ञा दी, "पास वाली मस्जिद में चार मौलवी रहते हैं, उन्हें सौ-सौ कोड़े लगाए जाएं। जब यह काम कर चुको तो मेरी ओर से लिखित आज्ञा जारी कर दो कि वे भविष्य में उस मस्जिद में या उस गली में न रहें। इसके अतिरिक्त उन्हें गधों पर उल्टा मुंह करके बांध दो और सारे शाहर में घुमाओ।"

"हजूर ! आपकी आज्ञा के अनुसार सारा काम कर दिया जाएगा। कोई और आज्ञा हो तो बताइए ?"

"हां और आज्ञा भी है। मस्जिद के पास वाली गली में अबू हसन के घर जाओ और उसकी मां को सोने की सौ मोहरें देकर आओ।"

उसकी इस आज्ञा का भी तुरन्त पालन किया गया।

इसके बाद अबू हसन ने नौकरों को वहां

से चले जाने की आज्ञा दी।

उसे लगने लगा कि मैं तो सचमुच का बादशाह हूं।

कुछ देर बाद उसे भूख लगी। उसने नौकरों को कहा, "जल्दी जाओ और कुछ खाने के लिए लाओ।"

नौकर उसे खाने के कमरे में ले गए। उस सजे हुए कमरे में खाने की स्वादिष्ट चीजों से भरी हुई मेज रखी हुई थी। फल, मेवे, मिठाइयां, खाने और पीने की सारी चीजें वहां रखी हुई थीं।

अबू हसन को पिछले दिन की बातें याद आ रही थीं। उसने सोचा, कल शाम जिस आदमी को मैंने अपने घर पर खाना खिलाया था, लगता है वह कोई जिन होगा। तभी तो उसके बदले में उसने मुझे यहां का बादशाह बना दिया। जिन जिस पर कृपालु हो जाएं उसे जो चाहें बना सकते हैं। उनके लिए कोई काम कठिन नहीं है।

जिस समय वह ये बातें सोच ही रहा था,

एक युवती नौकरानी शर्बत का प्याला भरकर ले आई। उस शर्बत में बेहोशी की दवाई मिली हुई थी। पर अबू हसन को तो इसका पता था नहीं। उसने ज्योंही शर्बत दिया, उसे नींद आ गई और वह सो गया।

उसके गहरी नींद में सो जाने पर असली खलीफा आया। उसने नौकरों को आज्ञा दी की अबू हसन को उसके घर छोड़ आओ।

नौकर सोए हुए अबू हसन को उसके घर छोड़ आए।

जब अबू हसन जागा तो चारों ओर अन्धेरा फैला हुआ था। उसने आवाज देकर पूछा, "इस समय मैं कहाँ हूँ?"

पर किसी ने कोई उत्तर नहीं दिया।

जब अबू हसन जोर-जोर से पुकारने लगा तो उसकी बुढ़िया माँ दौड़कर आई।

अबू हसन ने अपनी बुढ़िया माँ को देखकर पूछा, "अरी बुढ़िया! तू कौन है?"

अबू हसन समझ रहा था कि वह खलीफा है और शाही महल में रह रहा है।

"मैं तुम्हारी माँ हूँ बेटा !" वह समझ नहीं पा रही थी कि आज उसका बेटा उसे पहचान क्यों नहीं रहा है।

"तुम मेरी माँ नहीं हो। क्या तुम जानती नहीं हो कि मैं खलीफा हूँ।" अबू हसन ने गर्ज कर कहा।

अबू हसन की बात सुनकर बुढ़िया घबरा गई। बोली, "बेटा ! चुप भी रहो। अगर कोई सुन लेगा तो तुरन्त तुम्हें पकड़कर ले जाएगा और जेल में बन्द कर देगा। सुनो, मैं तुम्हें एक अच्छी खबर सुनाती हूँ। कल खलीफा ने तुम्हारे शत्रुओं को दण्ड देकर शहर से निकाल दिया है और मेरे लिए सौ सोने की मोहरें भेजी हैं।"

अबू यह सुनकर चीख पड़ा। बोला, "वह मैं ही था, जिसने तुम्हें सौ सोने की मोहरें भेजी थीं। मैंने ही इन मौलवियों को सजा दी है। खलीफा मैं हूँ। मैं तुम्हारा बेटा नहीं हूँ।"

उसकी माँ ने उसे वास्तविकता को समझाने

का प्रयत्न किया पर इससे अबू हसन और बिगड़ उठा और अपनी माँ को पीटने लगा क्योंकि उसकी माँ, उसकी बातों को सच नहीं मान रही थी।

अबू हसन की माँ की चीखें सुनकर पास-पड़ोस वाले इकट्ठे हो गए और अबू हसन को रोका।

पास-पड़ोस वाले बोले, "अबू हसन पागल हो गया है। उन्होंने जबर्दस्ती उसके हाथ रस्सियों से पीछे की ओर बाँध दिए और उसे एक जगह कमरे में बंद कर दिया। उसके गले में एक लोहे की भारी जंजीर डालकर उसे एक खूँटे से बाँध दिया। वे प्रतिदिन उसे खाने-पीने के लिए कुछ दे देते।

जब इसी तरह करते दस दिन हो गए तो उसकी माँ उसे देखने गई। उसने खिड़की में से झाँककर भीतर जंजीर से बँधे अबू हसन को देखा। वह चुपचाप बैठा कुछ सोच रहा था। अब उसे यह लगने लगा था कि वह खलीफा नहीं, बुढ़िया का बेटा

अबू हसन है। उसने सोचा, 'खलीफा बनने का मैंने सपना देखा होगा।"

उसने माँ को खिड़की में से झाँकते देखा तो पहचान लिया और बोला, "माँ, मुझे इस बात का बड़ा पछतावा है कि मैंने तुम्हें छड़ी से पीटा। मेरे अपराध को क्षमा कर दो। मुझे यहाँ से घर ले चलो। ऐसी भूल मैं दोबारा कभी नहीं करूँगा।"

उसी की माँ के कहने से लोगों ने उसे घर भेज दिया। उन्हें भी विश्वास हो गया कि इसका पागलपन दूर हो गया है। अब अबू हसन अपने घर में शान्ति से रहने लगा।

वह प्रतिदिन शाम को फिर पुलिया पर जाकर बैठ जाता। एक दिन व्यापारी जैसे कपड़े पहने खलीफा हारूं अल रशीद वहाँ से निकला और उसके पास आया।

अबू हसन ने उसे कहा, 'पापी, मेरे पास से हट जाओ। मैं तुम्हारे साथ बात नहीं करना चाहता। तुम्हीं वह जिनों के राजा हो न जिसने मुझे इस भ्रम में डाला कि मैं

खलीफा हूँ।" तुम्हारे ही कारण मैं पागल समझा गया और कोठरी में बन्द कर दिया गया। मुझे तुम्हारे जैसे दुष्ट व्यक्ति का साथ नहीं चाहिए।"

अबू हसन को अब तक भी असली बात का पता नहीं था और वह समझ रहा था कि यह आदमी जिनों का राजा है।

खलीफा उसकी बात सुनकर जोर से हँस पड़ा और बोला, "क्यों? मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?"

अबू हसन क्रोध से बोला, "तुम मेरा जितना कुछ बिगाड़ सकते थे, उसमें तुमने कोई कमी नहीं रखी।" फिर उसने खलीफा को पिछली सारी बातें बताईं।

सारी बात सुनकर खलीफा ने कहा, "ठीक है। मैंने तुम्हें इस बात का अवसर दिया था कि तुम अपने शत्रुओं को जो चाहो दण्ड दे सको। और वह तुमने दिया भी।"

"हाँ, मैंने अपने शत्रुओं को दण्ड दिया, यह ठीक है और वह सब आपकी कृपा से

ही हुआ। अबू हसन का क्रोध कुछ-कुछ ठण्डा पड़ने लगा।

खलीफा ने उसे समझाया कि बाकी जो कुछ हुआ वह तुम्हारी भूल के कारण ही हुआ। उसमें मेरा कोई दोष नहीं है।

बात अबू हसन की समझ में आ गई।

अब फिर वे दोनों एक-दूसरे के मित्र बन गए।

खलीफा के कहने से अबू हसन उसके साथ महलों में रहने लगा। वह खलीफा और उसकी पत्नी जुबैद का गहरा मित्र बन गया।

कुछ दिन बीतने पर खलीफा की पत्नी जुबैद ने अपनी एक युवती और सुन्दरी दासी से अबू हसन का विवाह करवा दिया। अबू हसन की पत्नी का नाम था नौजात।

अब वे दोनों मजे से महलों में रहने लगे। नौजात खलीफा की बेगम की सहेली बन गई। बेगम नौजात को और खलीफा अबू हसन को बहुत चाहता था।

अबू हसन और उसकी पत्नी दोनों खुल-

कर खर्च करते थे। कमाते कुछ थे नहीं। इसलिए एक दिन ऐसा आया कि उनके पास फूटी कोड़ी भी नहीं बची। पति-पत्नी दोनों सोचने लगे कि क्या किया जाए! कहाँ से धन आए, जिससे तंगी दूर हो।

अबू हसन ने एक उपाय सोच निकाला। उसे याद आया कि बहुत पहले खलीफा ने मेरे साथ एक चाल चली थी। उसका बदला लेने का अच्छा अवसर है। उसने खलीफा के साथ एक चाल चलने का निश्चय किया।

उसने अपनी पत्नी को बुलाकर समझाया, "हम दोनों मरने का बहाना करके खलीफा से रुपए ऐंठेंगे।

"मैं मरे हुए व्यक्ति की तरह लेट जाऊँगा। तुम मेरे ऊपर रेशमी चादर उढ़ा देना। फिर तुम रोना-पीटना शुरू कर देना जैसे तुम्हारा पति सचमुच मर गया हो और इसकी खबर खलीफा की बेगम को दे देना। वह तुम्हारे दुःख से दुःखी होगी और तुम्हारी सहायता के लिए सोने की मोहरें और कफन के लिए

रेशमी चादरें भेजेगी।

"इसके बाद मेरी जगह तुम लेट जाना, जैसे तुम मर गई हो। मैं रोता-पीटता खलीफा के पास जाऊँगा और तुम्हारे मरने का समाचार सुनाऊँगा। खलीफा भी मेरे दुःख से दुःखी होगा और इस विपत्ति के समय मेरी सहायता करेगा। वह भी मुझे सोने की मोहरें और कफन के लिए बढ़िया रेशमी चादरें देगा।"

उन दोनों ने मिलकर ऊपर की योजना के अनुसार बारी-बारी मरने का नाटक किया।

बेगम जुबैद ने जब सुना की उसकी सहेली का पति और उसके पति का मित्र अबू हसन मर गया है तो वह फूट-फूटकर रोने लगी।

उसने उसे दफनाने के लिए खुलकर सहायता दी। दो सौ सोने की मोहरों के अतिरिक्त कफन के लिए रेशम की चादरें भी दीं।

उधर खलीफा ने जब सुना कि उसके मित्र की पत्नी मर गई है तो उसने अबू हसन को

दो सौ मोहरें और कफन के लिए रेशमी चादर दी।

अबू हसन की योजना सफल हुई। चार सौ सोने की मोहरें और रेशमी चादरें मिल जाने से वह प्रसन्नता के मारे घर में नाचने-कूदने लगा।

खलीफा और बेगम को इस तरह मूर्ख बनाकर वे बहुत प्रसन्न थे।

□ □ □

उधर खलीफा को जब अबू हसन ने बताया कि उसकी पत्नी मर गई है तो यह शोक-समाचार अपनी बेगम को सुनाने के लिए वह उसके महल में गया। उसके साथ उसका खास नौकर मसरूर भी था।

उधर बेगम अपनी सहेली के पति के लिए आंसू बहाती उदास बैठी थी और खलीफा को बताने के लिए दासी भेजने वाली थी। बेगम ने खलीफा को बताया कि उसकी सहेली का पति और आप का मित्र अबू हसन मर गया है।

यह सुनकर खलीफा को हंसी आ गई।

उसने बेगम से कहा, "तुम्हें गलती लग रही है। अबू हसन नहीं, उसकी पत्नी मरी है।"

बेगम जुबैदा बोली, "गलती मुझे नहीं तुम्हें लग रही है। मेरी सहेली नौजात तो बिल्कुल ठीक है। मरा तो अबू हसन है। नौजात तो कुछ देर पहले ही मेरे पास आई थी। बेचारी रो-रोकर बेहाल हो रही थी। वहीं मुझे बता गई है कि अबू हसन मरा है।"

तुम बिल्कुल मूर्खता की बात कर रही हो। तुम्हें कुछ पता नहीं है। नौजात मरी है, नौजात। अबू हसन तो अच्छा भला है। वही मेरे पास आया था और मुझे बता गया है।"

बेगम ने कहा, "आप चाहे जो समझें, सच बात यह है कि बेचारा अबू हसन मरा है और नौजात विधवा हो गई है। मुझे इसमें रत्तीभर भी सन्देह नहीं है।"

खलीफा चक्कर में पड़ गया। कौन-सच्चा है और कौन-झूठा, इसका निश्चय करने के लिए उसने अपने नौकर मसरूर को कहा, "तुम दौड़कर अबू हसन के घर जाओ और

पता करके आओ कि कौन मरा है—अबू हसन या उसकी पत्नी नौजात।"

मसरूर खलीफा की आज्ञा मिलते ही भागता हुआ अबू हसन के घर पहुंचा। खिड़की में से अबू हसन ने मसरूर को आते देख लिया।

उसने अपनी पत्नी से कहा, "खलीफा का भेजा हुआ मसरूर चला आ रहा है। मुझे लगता है कि खलीफा ने उसे यह पता करने भेजा है कि हम दोनों में से कौन मरा है। तुम जल्दी से मुर्दे की तरह सीधी लेट जाओ। मैं तुम्हारे ऊपर चादर उढ़ा देता हूँ। मसरूर जब भीतर आएगा तो उसे विश्वास हो जाएगा कि तुम मरी हो।"

नौजात मुर्दे की तरह लेट गई। अबू हसन ने उसके ऊपर अच्छी तरह चादर ओढ़ा दी।

मसरूर ने भीतर आकर देखा कि नौजात मरी पड़ी है और अबू हसन आंसू बहाता बैठा है। मसरूर को पूरा विश्वास हो गया कि नौजात मरी है और अबू हसन ने खलीफा

के साथ ठीक ही कहा है।

मसरूर के बाहर निकलते ही नौजात उठ बैठी। अबू हसन अपनी चालाकी के चल जाने से बड़ा प्रसन्न था और जोर-जोर से हंस रहा था।

मसरूर वापस महल में पहुँचा और बताया कि मैं अपनी आँखों से देख आया हूँ कि नौजात मरी पड़ी है और अबू हसन पास बैठा रो रहा है।

मसरूर की बात सुनकर खलीफा की बेगम गुस्से से लाल-पीली हो गई। अपनी बात झूठी होते देखकर उसने मसरूर को झूठा बताया। उसने खलीफा से कहा, "आप मेरी बात पर विश्वास न करके एक नौकर की बात पर विश्वास कर रहे हैं। मैं इसकी बात पर विश्वास नहीं कर सकती। मैं अभी अपनी दासी को भेजकर सच्ची बात का पता लगाती हूं। मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकती हूँ कि अबू हसन ही मरा है। आह! बेचारी नौजात विधवा हो गई।"

उसने अपनी बूढ़ी नौकरानी को बुलाया। यह नौकरानी सच बोलने के लिए प्रसिद्ध थी। उसने नौकरानी को आज्ञा दी, "जल्दी अबू हसन के घर जाओ और पता करके आओ कि अबू हसन मरा है या नौजात। ठीक-ठीक पता लगाना।"

बूढ़ी नौकरानी जितनी जल्दी जा सकती थी, गई। अबू हसन ने ज्योंही उसे गली में आते देखा उसने नौजात से कहा, "बेगम की नौकरानी भी सच बात का पता लगाने दौड़ी चली आ रही है। अब मैं मुर्दे की तरह लेटता हूँ और तुम बैठकर रोने का नाटक करो। मुझे मरा पड़ा देखकर वह बेगम को जाकर बता देगी।"

अबू हसन लेट गया। नौजात ने चादर ओढ़ा दी।

नौकरानी ने घर में घुसकर देखा कि अबू हसन मरा पड़ा है और नौजात पास बैठी आँसू बहा रही है।

उसने नौजात को इस दुःख के अवसर

पर धीरज बन्धाया और दो-चार बातें करके लौट पड़ी।

उसे बेगम को सही बात बताने की जल्दी थी।

जब नौकरानी ने बेगम जुबैदा को बताया कि अबू हसन मरा है और नौशात उसके वियोग में बैठी रो रही है तो उसे अपनी नौकरानी पर पूरा विश्वास हो गया। उसने समझ लिया कि मसरूर ने झूठा कहा है।

उसने मसरूर को बुलाया और झिड़क-कर कहा कि तुम झूठे हो। नौकरानी बता रही है कि अबू हसन मरा पड़ा है। अब जाओ और खलीफा को बताकर आओ कि सदा सच बोलने वाली नौकरानी ने बताया है कि अबू हसन मरा पड़ा है।

पर मसरूर भी अपनी बात पर अड़ गया। उसने कहा, "झूठा मैं नहीं, यह नौकरानी है। मैंने अपनी आंखों से अबू हसन को जीवित देखा है और उसकी बीवी को मरा हुआ।"

यह सुनकर बूढ़ी नौकरानी बिगड़ उठी।

पर धीरज बन्धाया और दो-चार बातें करके लौट पड़ी।

उसे बेगम को सही बात बताने की जल्दी थी।

जब नौकरानी ने बेगम जुबैदा को बताया कि अबू हसन मरा है और नौजात उसके वियोग में बैठी रो रही है तो उसे अपनी नौकरानी पर पूरा विश्वास हो गया। उसने समझ लिया कि मसरूर ने झूठा कहा है।

उसने मसरूर को बुलाया और झिड़क-कर कहा कि तुम झूठे हो। नौकरानी बता रही है कि अबू हसन मरा पड़ा है। अब जाओ और खलीफा को बताकर आओ कि सदा सच बोलने वाली नौकरानी ने बताया है कि अबू हसन मरा पड़ा है।

पर मसरूर भी अपनी बात पर अड़ गया। उसने कहा, "झूठा मैं नहीं, यह नौकरानी है। मैंने अपनी आंखों से अबू हसन को जीवित देखा है और उसकी बीवी को मरा हुआ।"

यह सुनकर बूढ़ी नौकरानी बिगड़ उठी।

बोली, "झूठे कहीं के। तुम लोगों को आपस में लड़ाना चाहते हो। मैं अभी-अभी अपनी आँखों से देखकर आई हूँ।"

मसरूर ने कहा, "बिल्कुल झूठ। मैं भला किसी को क्यों लड़ाना चाहूंगा। बेगम तो तुम्हारी बात को ही सच मानेंगी। तुम उनकी मुँह लगी नौकरानी जो हो।"

बेगम जुबैदा ने खलीफा से मसरूर की शिकायत की कि वह जबान-जोर है। लपर-लपर बोलता है और मेरी नौकरानी पर बिगड़ रहा था। उसे बात करने का ढंग भी नहीं आता। झूठ बोलता है और फिर जिद करता है।

खलीफा की समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि मामला क्या है। किसकी बात को सच मानें और किसकी बात को झूठ।

खलीफा ने कहा, "इस बात की सचाई मालूम करने का सबसे बढ़िया तरीका यही है कि हम सब इकट्ठे होकर अबू हसन के घर चलें और देखें कि कौन मरा है और

कौन जिन्दा है।"

यह बात सबको जाँच गई। खलीफा, बेगम जुबैद, मसरूर और बूढ़ी नौकरानी चारों इकट्ठे होकर अबू हसन के घर की ओर चले।

□ □ □

खलीफा को पूरा विश्वास था कि उसका मित्र अबू हसन जीवित है। बेगम जुबैद सोच रही थी कि अभी-अभी मसरूर के झूठ का भंडा फूट जाएगा।

□ □ □

अबू हसन पहले से यह सोचे बैठा था कि महल में खूब गड़बड़ मची होगी और कोई तीसरा आदमी पता लगाने के लिए आएगा। वह खिड़की के पास बैठकर गली की ओर देख रहा था कि आने वाले का पता चल जाए।

उसने देखा कि एक नहीं चार-चार जने चले आ रहे हैं और उनमें खलीफा और बेगम भी हैं।

नौजात घबराकर बोली, "वे सब इकट्ठे आ गए। अब क्या करें ?"

"घबराने की कोई जरूरत नहीं। अब हम दोनों ही मरने का बहाना करके लेट जाएंगे।" अबू हसन ने कहा।

वे दोनों पास-पास मुर्दों की तरह लेट गए और ऊपर चादरें ओढ़ लीं।

□ □ □

सबसे पहले खलीफा अन्दर आया, फिर बेगम जुबैद और बाद में मसरूर और बुढ़िया नौकरानी। चारों मुर्दों के पास खड़े हो गए और दुख से आँसू बहाने लगे।

बेगम जुबैद ने सिसकियाँ भरते हुए कहा, "बेचारे दोनों मर गए। मेरी प्यारी सहेली पति की मौत का दुःख सहन नहीं कर सकी और बेचारी ने प्राण दे दिये। दोनों एक दूसरे को कितना चाहते थे।"

खलीफा को लगा कि बेगम अपनी बात को ही सच करने पर तुली हुई है। वह बोला, "मुर्खता की बात मत करो। मैंने कहा नहीं

था कि अबू हसन मेरे पास आया था और बता गया था कि उसकी पत्नी मर गई है। आँसुओं से उसके कपड़े भीगे थे। बेचारा बड़ी दुःखी था। मैंने उसे दो सौ मोहरें दी थीं ताकि वह अपनी पत्नी को दफनाने का काम कर सके। वह बाद में मरा है क्योंकि वह अपनी अच्छी पत्नी के मरने का दुःख नहीं सह सका। बेचारा अकेला जी कर क्या करता। वह जब तक जीता रहा, अपनी पत्नी पर जान देता था और पत्नी के मरने पर भी उसने जान दे दी। हाय! मेरा दोस्त इस संसार से चल बसा।"

बेगम जुबैदा को खलीफा की बात पर विश्वास नहीं था। वह मानती थी कि अबू हसन ही पहले मरा है। बड़ी देर तक दोनों वहाँ खड़े बहस करते रहे। पर दोनों अपनी-अपनी बात पर अड़े रहे।

बहस का अन्त न होते देखकर खलीफा ने कहा, "अगर कोई मुझे ठीक-ठीक बताए कि पहले कौन मरा था तो मैं उसे एक हजार सोने

की मोहरें इनाम में दूंगा।"

यह सुनते ही अबू हसन उठ बैठा।

सब आश्चर्य से आँखें फाड़-फाड़ कर उसकी ओर देखने लगे।

इतने में वह बोला, "मैं पहले मरा था। अब मुझे एक हजार सोने की मोहरें दीजिए। क्योंकि आपने सही बात बताने वाले को इतनी ही मोहरें देने का वायदा किया है।"

जब नौजात ने अपने पति को यह कहते सुना तो वह भी उठ बैठी और बोली, "बेगम साहिबा मैं पहले नहीं मरी थी। हम तो दोनों मरने का बहाना कर रहे थे।"

यह सुनकर बेगम को बड़ा गुस्सा आया। उसे इस तरह का मजाक करना अच्छा नहीं लगा।

पर खलीफा इस मजाक पर खिलखिला कर हँस पड़ा। हंसते-हंसते वह लोट-पोट हो गया। उसने अबू हसन को कहा, "तुम भी गजब के मजाकिये हो। तुमने हम सबको खूब बुद्धू बनाया।"

की मोहरें इनाम में दूंगा।"

यह सुनते ही अबू हसन उठ बैठा।

सब आश्चर्य से आँखें फाड़-फाड़ कर उसकी ओर देखने लगे।

इतने में वह बोला, "मैं पहले मरा था। अब मुझे एक हजार सोने की मोहरें दीजिए। क्योंकि आपने सही बात बताने वाले को इतनी ही मोहरें देने का वायदा किया है।"

अब नौजात ने अपने पति को यह कहते सुना तो वह भी उठ बैठी और बोली, "बेगम साहिबा मैं पहले नहीं मरी थी। हम तो दोनों मरने का बहाना कर रहे थे।"

यह सुनकर बेगम को बड़ा गुस्सा आया। उसे इस तरह का मजाक करना अच्छा नहीं लगा।

पर खलीफा इस मजाक पर खिलखिला कर हँस पड़ा। हंसते-हंसते वह लोट-पोट हो गया। उसने अबू हसन को कहा, "तुम भी गजब के मजाकिये हो। तुमने हम सबको खूब बुद्धू बनाया।"

बेगम जुबैदा बोली, "तुम्हें रुपए-पैसे की जरूरत थी तो हमें बताया क्यों नहीं ?"

नौशात बोली, "माँगने में बड़ी शर्मंल गती थी।"

अबू हसन बोला, "मेरे पास फूटी कौड़ी भी नहीं बची थी। आखिर माँगने की भी हद होती है। मैं जब तक अकेला था, ज्यादा खर्च नहीं करता था। पर शादी हो जाने के बाद तो जो कुछ पल्ले था, सारा का सारा खर्च हो गया। खैर, खलीफा साहब अब आप अपने वायदे को पूरा कीजिए और मुझे इनाम की एक हजार मोहरें दीजिए।"

खलीफा और बेगम अबू हसन की बात सुन कर हंस पड़े।

वे हंसते-बोलते महल में लौट आए और नौकर के हाथ अबू हसन को एक हजार सोने की मोहरें दे भेजीं।

□ □ □

खलीफा प्रसन्न था कि उसका दोस्त मरा नहीं था। तब से उसने प्रतिवर्ष अब हसन को

खर्च के लिए काफी मोहरें देनी शुरू कर दीं।

बेगम जुबैदा ने भी अपनी सहेली नौजात की सहायता के लिए एक हजार सोने की मोहरें भेज दीं।

अबू हसन और नौजात बड़े मजे से रहने लगे और खलीफा के गुण गाने लगे।

ooo